सूर्य उपासना का उद्विकास

ऐतिहासिक संदर्भ में सूर्य की उपासना ऋग्वैदिक काल से होती रही है। ऋग्वेद में सवित/सविता की प्रतिष्ठा में एक मंत्र मिलता है जिससे हम सब वाकिफ हैं। यह मंत्र गायत्री मंत्र के नाम से चर्चित है। सवित /सविता सूर्य का प्रतीक है। वैदिक देवमण्डल में हम सूर्य का महत्वपूर्ण स्थान पाते हैं। वहाँ वे विष्णु के प्रतीक के रूप में उपस्थित हैं। एक पृथक और महत्वपूर्ण देवता के रूप में सूर्य की उपासना कुषाण काल में प्रारंभ होती है। इसी समय से उनकी मूर्तियां हमें मिलनी प्रारंभ होती हैं।

सूर्य की कुछ मूर्तियों को मथुरा संग्रहालय में देखा जा सकता है।मथुरा से हमें कुषाण काल की पुरानिधियाँ बड़े पैमाने पर प्राप्त हुई हैं। कुषाण शासक चीन की यू-ची प्रजाति से संबंधित थे और प्रव्रजन के माध्यम से हिंदुस्तान आये थे। उनका राज्य मध्य एशिया से मथुरा तक फैला था।उनके पहनावे-ओढावे में विदेशी तत्व पर्याप्त मात्रा में दिखाई देते हैं। ये प्रभाव हमें उनके शासन काल में बनी सूर्य प्रतिमाओं में भी देखने को मिलता है। मथुरा संग्रहालय की मूर्ति अपनी साज-सज्जा और बनावट में पूर्णतयः मध्य एशियाई है। वह कुषाण शासकों की तरह सटा-सलूका (वेस्ट कोट) और घुटने तक जूते पहने तथा कमल पुष्प धारण किये हुए है। इस वजह से उसके कुषाण शासक होने का भरम पैदा होता है।

भविष्य पुराण और अन्य साहित्यिक स्रोतों से जानकारी मिलती है कि सूर्योपासना के लिए शक द्वीप से पुरोहित बुलवाये गए थे।उन्हें मग पुजारी कहा गया है। मग जाति के लोग ईरान के रहने वाले थे।जिन्होंने तीसरी सदी के लगभग भारत में आकर सूर्योपासना का प्रचार किया। इस तथ्य के आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि भारतीय समाज /पुरोहित सूर्योपासना के कर्मकांडों से परिचित नहीं थे।इसलिए सूर्य पूजा में निपुण मध्य एशियाई शाकल द्वीपी पुजारी सूर्य पूजा सम्पन्न कराने के लिए आमंत्रित किये गए थे।

ब्राह्मण देवताओं में सूर्य की गिनती एक प्रमुख देवता के रूप में की जाती है।सूर्य के उपासकों के सम्प्रदाय को सौर सम्प्रदाय कहा गया है। विश्व की सभी प्राचीन सभ्यताओं से सूर्य की उपासना के प्रमाण मिलते हैं।जीवन दायनी प्रकाश और ऊर्जा के अजस्र स्रोत के रूप में सूर्य की प्रतिष्ठा रही है।मिस्र,मेसोपोटामिया, ईरान,यूनान से देवता के रूप में सूर्य की लोकप्रियता की सूचना मिलती है। वैदिक साहित्य, महाकाव्य, पुराण इत्यादि साहित्यिक स्रोत सूर्योपासना के साथ-साथ सूर्य के विभिन्न नामों और स्वरूप का उल्लेख करते हैं। नव ग्रहों के रूप में सूर्य पूजन जैन परम्परा में भी लोकप्रिय

था। सूर्य की प्रारंभिक मानवाकार मूर्तियां हमें बोधगया से मिलती हैं। कुषाण शासकों के समय से हम सूर्य प्रतिमा पर विदेशी प्रभाव देखते हैं।शुरुआत में सूर्य को एक चक्र और चार अश्वों वाले रथ पर उषा और प्रत्यूषा के साथ दिखाया गया है। कुषाण काल में सूर्य पूजा एवं मूर्ति निर्माण में ईरानी मगों के प्रभाव के कारण वर्म, उपानह,अवयंग के रूप में विदेशी प्रभाव का प्रवेश हुआ। गुप्त काल तक मूर्तियों पर विदेशी प्रभाव बना रहा। मध्यकालीन मूर्तियों को हम इस प्रभाव से मुक्त पाते हैं। किन्तु उपानह की उपस्थिति बनी रहती है। भारतीय देवताओं में सूर्य अकेले ऐसे देवता हैं जो उपानह या जूते धारण करते हैं। खास बात ये है कि चमड़े को परम्परा से भारत में अपवित्र माना जाता रहा है। सूर्य पूजा और मूर्ति निर्माण में विदेशी तत्वों के समाविष्ट किये जाने के कारण ही दक्षिण भारत में सूर्योपासना को वह लोकप्रियता नहीं मिली जो अन्य ब्रह्मण देवताओं को प्राप्त हुई।

साहित्य और पुरातत्व में सूर्य उपासना के अनेक उल्लेख मिलते हैं।साहित्यिक स्रोतों में चन्द्रभागा नदी के तट पर एक सूर्य मंदिर का उल्लेख किया गया है। चंद्रभागा को चेनाब का प्राचीन नाम स्वीकार किया जाता है। इस मंदिर का उल्लेख चीनी यात्री युवान च्वांग (सातवीं शताब्दी ईसवी) के यात्रा विवरण में भी मिलता है। मन्दिर के मुल्तान में स्थिति होने की बात कही गयी है। इसी मंदिर के साथ कृष्ण के पुत्र साम्ब का कुष्ठ रोग वाला मिथक जोड़ा गया है जिसका उल्लेख गरुड़ पुराण में भी मिलता है। कालांतर में यह मिथक कोणार्क (उड़ीसा) के सूर्य मंदिर से जुड़ गया।

वराहमिहिर और कालिदास भी सूर्य उपासना का उल्लेख करते हैं। वराह मिहिर के अनुसार सूर्य उपासना के लिए मगों को ही पुजारी बनाया जाता था। वराह मिहिर का समय छठी शताब्दी ईसवी माना जाता है। कालिदास के रघुवंश में सूर्य के सात हरे अश्वों का उल्लेख है। कालिदास के समय को लेकर इतिहासकारों में मतभेद है। सर्वाधिक प्रचलित मान्यता के अनुसार उन्हें चौथी-पांचवीं शताब्दी ईसवी में रखा गया है। गुप्त शासक कुमार गुप्त का मंदसौर अभिलेख भी सूर्य उपासना का संकेत देता है। कुमार गुप्त (414-455 ईसवी) के शासन काल में रेशम बुनकरों की एक श्रेणी ने मंदसौर के निकट दशपुर में एक सूर्य मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया। हूण शासक तोरमाण और मिहिरकुल के सूर्य उपासक होने के प्रमाण मिलते हैं।

मुल्तान के सूर्य मंदिर का उल्लेख अल-बरुनी₹(10वीं शताब्दी), अल-मसूदी(10वीं शताब्दी), इस्तखरी(10वीं शताब्दी), इब्न हौकल(10वीं शताब्दी) आदि लेखकों ने किया है।

वराहमिहिर और कालिदास भी सूर्य उपासना का उल्लेख करते हैं। वराह मिहिर के अनुसार सूर्य उपासना के लिए मगों को ही पुजारी बनाया जाता था। वराह मिहिर का समय छठी शताब्दी ईसवी माना जाता है। कालिदास के रघुवंश में सूर्य के सात हरे अश्वों का उल्लेख है। कालिदास के समय को लेकर इतिहासकारों में मतभेद है। सर्वाधिक प्रचलित मान्यता के अनुसार उन्हें चौथी-पांचवीं शताब्दी ईसवी में रखा गया है। गुप्त शासक कुमार गुप्त का मंदसौर अभिलेख भी सूर्य उपासना का संकेत देता है। कुमार गुप्त (414-455 ईसवी) के शासन काल में रेशम बुनकरों की एक श्रेणी ने मंदसौर के निकट दशपुर में एक सूर्य मंदिर का

जीर्णोद्धार करवाया। हूण शासक तोरमाण और मिहिरकुल के सूर्य उपासक होने के प्रमाण मिलते हैं। मुल्तान के सूर्य मंदिर का उल्लेख अल-बरुनी₹(10वीं शताब्दी), अल-मसूदी(10वीं शताब्दी), इस्तखरी(10वीं शताब्दी), इब्न हौकल(10वीं शताब्दी) आदि लेखकों ने किया है।